सफरनामा

समुदाय और मैं एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, मैं बदलूंगा तो समाज बदलेगा, हम अलग नहीं हैं।

ohjsnj d|ekj ¼oh:½

मेरा नाम वीरेंदर कुमार है, मेरे दोस्त साथी प्यार से मुझे वीरू कहकर बुलाते हैं। मैं मदनपुर खादर जे.जे. कालोनी क्षेत्र में रहता हूं। मैं जागोरी में इंटर्नशिप के तहत जुड़ा हुआ हूं। जागोरी से मेरा साथ 2008 से है, ये बात उस समय की है जब मेरी उम्र 14 साल की थी। उस समय से लेकर अब तक मुझे जागोरी से काफ़ी कुछ सीखने व समझने को मिला है। इस दौरान मैंने व मेरे परिवार वालों ने मुझमें काफ़ी कुछ बदलाव देखा है। मेरे जीवन और विचारों तथा मेरी पारिवारिक स्थिति में आने वाले इन्हीं बदलावों को देखते हुए जागोरी ने मुझे काम करने का मौका दिया, मदनपुर खादर क्षेत्र में सामुदायिक संपर्क एवं काम के लिए मुझे इंटर्नशिप पर काम करने का मौका दिया गया। इस इंटर्नशिप के दौरान जागोरी में मुझे युवाओं और लाइब्रेरी तथा जन सुविधा पर काम करने की ज़िम्मेदारी सौंपी। इस काम को लकर मेरा यह पहला अनुभव था। शुरूआत के कुछ महीने में मुझे युवाओं के साथ संपर्क करने और अपने काम को थोड़ा समझने में काफ़ी पेरशानियां हुईं, लेकिन उसके बाद मैंने मेहनत करके काम को सीखा भी और समझा भी। इस दौरान मैंने युवाओं को जागोरी में जोड़ने के लिए काफ़ी मेहनत की और बहुत से युवाओं को साथ जोड़ा और उनके साथ अच्छा–दोस्ताना रिश्ता भी कायम किया। युवाओं के साथ संपर्क करना, जुड़ाव कायम करना, साप्ताहिक मीटिंग करना, उनकी समस्याओं को सुनना, उन्हें विभिन्न जानकारियां देना मेरी ज़िम्मेदारी थी। इसी दौरान युवाओं के साथ मिलकर सुरक्षा पर एक नाटक भी हमने तैयार किया और खादर के अलग–अलग समुदायों में जाकर दिखाया। इस पूरी प्रक्रिया में मेरे अंदर पब्लिक में बोलने को लेकर जो घबराहट और डर था, वह खत्म हुआ और अब मैं किसी भी समस्या पर खुलकर बात कर सकता हूं। मैंने अपने आपको खोल दिया है।

इसी के साथ मैंने पी.डी.एस. और आर.टी.आई. के विषय पर भी जानकारियां प्राप्त कीं, और काम को सीखा। इस काम को सीखने व समझने के लिए मैं जागोरी ऑफ़िस बवाना के समुदाय में भी गया। वहां मैंने राशन के तथा आर.टी.आई. के विषय को विस्तार से जाना और समझा। फिर इस काम को सीखने के बाद मैंने अपने समुदाय में राशन के मुद्दे पर पहल की। मैंने खादर में राशन की दो दुकानों की निगरानी की और राशन कार्ड के लिए तथा उनमें व्याप्त विभिन्न त्रुटियों के बारे में आर.टी.आई. का इस्तेमाल करते हुए जानकारियां हासिल की तथा उन समस्याओं का समाधान निकालने में लोगों की सहायता की। राशन दुकानों की निगरानी मैंने 4 महीने तक की, और इस दौरान मैंने जाना कि दुकान किस दिन व किस समय खुलती है, लोगों को कितना राशन और कब कब मिलना चाहिए, राशन दुकानदार का व्यवहार, उसके द्वारा किए जाने वाला अनाचरण, लोगों की शिकायतों को जानने समझने का मुझे मौका मिला। इस काम को करने में मुझे बहुत आनंद आया और मैंने राशन से जुड़े अपने अधिकारों के बारे में जाना व लोगों को भी जानकारियां दीं और एकजुट किया।

युवाओं के साथ काम करते हुए उनकी समस्याओं, उनके विचारों और भावनाओं को जानने समझने और उनसे गहरा जुड़ाव बनाने का मौका मिला। दो दिन की थियेटर वर्कशॉप के दौरान युवाओं के साथ मिलकर नाटक तैयार करते समय मुझे बहुत अच्छा लगा, हमने एक युवा समूह भी तैयार किया और उसका नाम 'युवाधारा' रखा। इस कार्यशाला में थियेटर के बारे में जानने के मिला कि नाटक क्या होता है, वह कैसे तैयार किया जा सकता है, उसमें किस प्रकार से अभिनय किया जाता है। इसी समूह के साथ मर्दानगी विषय पर नाटक तेयार किया। इस नाटक में मैंने भी हिस्सा लिया और अभिनय भी किया। यह मेरे लिए एकदम अनूठा अनुभव था, विषय की नजर से भी और अभिनय के नाते भी। मैंने जाना कि मर्दानगी का असली अर्थ सिर्फ़ शरीर मजबूत होना, मनमानी करना, छेड़छाड़ और दूसरों को तंग करना ही नहीं होता बल्कि असली मर्दानगी समाज में लड़कियों और महिलाओं के खिलाफ़ होने वाले भेदभाव को खत्म करने और एक सुरक्षित समाज तैयार करने में अहम् भूमिका निभा सकती है। मैंने जाना कि नुक्कड़ नाटक के जरिए हम कैसे समुदाय तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं। इस नाटक में किशोर व किशोरियां भी शामिल हुए। यह हम सभी के लिए एक अनूठा दोस्ताना अनुभव था।

जागोरी के साथ जुड़कर इस तरह के सामुदायिक और रचनात्मक कामों को करते हुए मेरा आतविश्वास बहुत बढ़ा है। यह जुड़ाव मेरे लिए हर पल एक नया अनुभव लेकर आया है। इस काम को करने में बेशक बहुत सी परेशानियां और कठिनाइयां भी सामने आई हैं, लेकिन वह काम ही क्या जिसमें ऐसी चुनौतियां और रोमांच न हों, फिर सीखने को कैसे मिलेगा। मौका मिला तो फिर से ऐसे प्रयासों के साथ जुड़ता रहूंगा जो समाज को ही नहीं ख़ुद को भी सीखने और आगे बढ़ने का रास्ता दिखाते हैं। अतः समुदाय को बदलने के लिए सदैव बदलाव की ओर बढ़ते रहना होगा–यही मेरा प्रयास है और रहेगा। मैं जान गया हूं कि–समुदाय और मैं एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, मैं बदलूंगा तो समाज बदलेगा, हम अलग नहीं हैं।